संपादक का नोट

प्रभु की स्तुति हों। रोज ऑफ शेरोन समाचार पत्र के इस मासिक प्रकाशन के माध्यम से मैं मसीह में हमारे सभी भाइयों और बहनों का अभिवादन करती हूँ।

2 कुरिन्थियों 11: 26–28 ''26 मैं बार बार यात्राओं में; नदियों के जोखिमों में; डाकुओं के जोखिमों में; अपने जातिवालों से जोखिमों में; अन्यजातियों से जोखिमों में; नगरों के जोखिमों में; जंगल के जोखिमों में; समुद्र के जोखिमों में; झूठे भाइयों के बीच जोखिमों में रहा। 27 परिश्रम और कष्ट में; बार बार जागते रहने में; भूख–प्यास में; बार बार उपवास करने में; जाड़े में; उघाड़े रहने में; 28 और अन्य बातों को छोड़कर जिनका वर्णन मैं नहीं करता, सब कलीसियाओं की चिन्ता प्रतिदिन मुझे दबाती है।'' प्रेरित पौलुस यह बताता है कि जब वह विभिन्न देशों और शहरों की यात्रा करता था, तो वह विभिन्न प्रकार के लोगों के बीच आता था। इस प्रक्रिया में, उन्होंने बहुत दुःख और दर्द का अनुभव किया, फिर भी मुसीबत के इन सभी समयों में, प्रभु के साथ उनका रिश्ता केवल मजबूत हुआ; और वह प्रभु से प्रार्थना करने से कभी पीछे नहीं हटा। वास्तव में, उसके दुःख और दर्द ने ही उसे प्रभु के करीब लाया, और प्रभु ने सभी सभाओं के लोगों के लिए उसके दिल में बहुत दया डाली।

प्रेरित पौलुस के विपरीत, योना, परमेश्वर द्वारा चुना गया एक नबी था, जो हर समय प्रार्थना करना चाहिए था, लेकिन मुसीबत के समय सोता पाया गया था। योना 1: 6 ''तब माँझी उसके निकट आकर कहने लगा, "तू भारी नींद में पड़ा हुआ क्या करता है? उठ, अपने देवता की दोहाई दे! सम्भव है कि ईश्वर हमारी चिन्ता करे, और हमारा नाश न हो।''

क्रिस्ति होने के नाते, हमें बहुत सावधान रहना चाहिए! हम जिस भी स्थिति में हों, हमारी प्रार्थना जीवन में कभी भी पीछे नहीं हटनी चाहिए, और हमें हमेशा प्रभु को अपने पास रखना चाहिए। यह प्रार्थना से ही संभव है। प्रार्थना वह समय है जब हम प्रभु से बात करते हैं। वह हमारे विश्वास के अनुसार हमारी हर प्रार्थना का जवाब देते है। एक सच्चे क्रिस्ति जीवन का मार्ग बहुत ही संकीर्ण है, जैसा कि यीशु मसीह ने भी बार बार कहा था, 'अगर वे मुझ पर हस सकते है और मजाक उड़ा सकते है, तो वे आपको भी नहीं छोड़ेंगे।' लेकिन मसीह का सबसे बड़ा आश्वासन जो हमारे पास है और जिस पर हम ढ़ृढ़ता से है। वह है 'ढाढ़स बाँधो, मैं ने संसार को जीत लिया है।'' इस अद्भुत वादे के लिए प्रभु की स्तुति करें जो हमें अपने जीवन में किसी भी प्रकार के परीक्षण और क्लेश को दूर करने में मदद कर सकते हैं।

अगर, आज हम आत्मारिक रूप से सो रहे हैं, तो एक बार फिर प्रभु हमें अपनी गहरी नींद से जगा रहे हैं। हम अलग–अलग तरीकों और स्थितियों में 'सोए' हो सकते हैं, लेकिन हमारी हर स्थिति प्रभु जानते है, और कुछ भी उनसे छिपा नहीं है। प्रेरितों के काम 20:31 कहता है ''इसलिये जागते रहो, और स्मरण करो कि मैं ने तीन वर्ष तक रात दिन आँसू बहा–बहाकर हर एक को चितौनी देना न छोड़ा।'' अपने प्रार्थना जीवन में कभी भी लापरवाह नहीं होना चाहिए। हमें सदैव सतर्क और प्रार्थनाशील रहना चाहिए, ऐसा न हो कि शैतान हमारे जीवन में कदम रखे, और हमारे जीवन में अपनी गंदी चाल चले। जैसे हमारा प्रभु न तो सोते है और न ही उंगते है, वैसे ही शैतान कभी भी पलक नहीं झपकाता, बल्कि छिपकर वार करनेवाला शेर है। वह हमारे ऊपर झपटने का इंतजार करता है, खासकर जब हम कमजोर होते हैं और प्रभु की उपस्थिति से दूर होते हैं, क्योंकि यही वह समय है जब हम उसके लिए आसान शिकार बन जाते हैं।

मरकुस 1:35 ''भोर को दिन निकलने से बहुत पहले, वह उठकर निकला, और एक जंगली स्थान में गया और वहाँ प्रार्थना करने लगा।'' यीशु हमेशा भोर में प्रार्थना करते थे, जबकि यह अभी तक अंधेरा था। हमारे जीवन में अंधेरा सभी प्रकार के पापी विचारों और दुष्ट योजनाओं को लाता है। यह अंधेरे में है कि सभी प्रकार के बुरे विचार हमारे मन में फैले हुए हैं। हमें हमेशा चौकस रहना चाहिए, खासकर रातों के दौरान। जिस क्षण शैतान हमारे विचारों के माध्यम से हम पर हमला करता है, हमें अपने घुटनों पर बैठना चाहिए और प्रभु की उपस्थिति के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। यह तब होता है जब हम अकेले होते हैं, कि शैतान हमारे मन में अविश्वास के बीज बोता है। यदि परमेश्वर हमारे साथ है और हम उनकी उपस्थिति में हैं, तो कोई भी बुरा काम कभी भी हमारे जीवन में पूरा नहीं हो सकता है।

जिस तरह हम दुनिया के मामलों में खुद को शिक्षित करते हैं और अपने आप को अपडेट और अपग्रेड करते है नए नए तकनीकों, फैशन आदि के लिए, उसी तरह हमें अपने प्रभु के साथ अपने संबंधों को लगातार अपडेट और अपग्रेड करते रहना चाहिए, और देखें कि हम कैसे उनके राज्य के कार्यों के लिए उपयोग हो सकते हैं ।

इसलिए, जागते रहो, सतर्क रहो, और प्रार्थना करो! अंत समय निकट हैं और हम अब 'अनुग्रह के समय' में रह रहे हैं। हमें अपने जीवन में सुस्ती और उदासीनता से प्रभु की कृपा को नहीं खोना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से हम अपने आप को शैतान के लिए सौंप देते हैं, सचमुच हम अपने आप को उसके थाली में परोस देते है!

उपरोक्त संपादक नोट हम में से सभी को मजबूत करे और हम सभी को आशीर्वाद मिले!

पास्टर सरोजा म।

परमेश्वर की खोज में रहो और तुम उसे पाओगे!

प्रेरितों के काम 10:14 ''परन्तु पतरस ने कहा, ''नहीं प्रभु, कदापि नहीं; क्योंकि मैं ने कभी कोई अपवित्र या अशुद्ध वस्तु नहीं खाई है।'' प्रेरित पतरस प्रार्थना करने के लिए, जोप्पा शहर के ऊपरी कमरे में गए थे। उस समय, उन्होंने एक आत्मारिक दर्शन को देखा। उस दर्शन में प्रेरितों के काम 10: 11–13 ''11 और उसने देखा, कि आकाश खुल गया; और एक पात्र बड़ी चादर के समान चारों कोनों से लटकता हुआ, पृथ्वी की ओर उतर रहा है। 12 जिस में पृथ्वी के सब प्रकार के चौपाए और रेंगनेवाले जन्तु और आकाश के पक्षी थे। 13 उसे एक ऐसा शब्द सुनाई दिया, ''हे पतरस उठ, मार और खा।'' इस दर्शन में, परमेश्वर ने पतरस से बात की और उसे अन्यजातियों के बीच जाने और परमेश्वर के वचन का प्रचार करने की आज्ञा दी। आज भी, इसी तरह के दर्शन, भविष्यद्वक्ताओं को अन्यजातियों के बीच परमेश्वर के वचन का प्रचार करने के लिए दिया जाता है। वचन कहता है, चाहे आपको कोई अवसर मिले या नहीं, आपको लगातार परमेश्वर के वचन का प्रचार करना जारी रखना चाहिए। 2 तीमुथियुस 4: 2 ''कि तू वचन का प्रचार कर, समय और असमय तैयार रह, सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ उलाहना दे और डाँट और समझा।'' अंत तब आएगा जब परमेश्वर का वचन अन्यजातियों के बीच, दुनिया के चार कोनों में प्रचार किया जाएगा। सभी लोगों को राज्य का वचन सुनना चाहिए, तभी हमारा प्रभु एक बार फिर इस दुनिया में आएगा। कुरनेलियुस नाम का एक व्यक्ति था जो एक सूबेदार था, वह एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति था और गरीबों और जरूरतमंदों के लिए उदारता से दान देता था। उसके दिल की इच्छा थी कि वचन जहाँ भी प्रचार हो, वह प्रभु के वचन को सुने। यह आदमी एक अन्य जाति का व्यक्ति था, लेकिन एक धर्मी व्यक्ति था और दयालु दान करनेवाला भी था। परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना सुनी और इस तरह प्रेरित पतरस को परमेश्वर के वचन का प्रचार करने के लिए उसके घर भेजा। हमें भी एक सभा के महत्व को जानना चाहिए, एक उपदेशक का चुनाव और परमेश्वर द्वारा उसके वचन को प्रचारित करने के लिए किया गया। प्रभु ने कहा मेरी आत्मा आकर वचन सिखाएगी। प्रेरित पतरस आत्मा से भर गया। इस प्रकार प्रभु ने अपने शिष्य पतरस को कुरनेलियुस और उसके परिवार को प्रचार करने के लिए भेजा और इस तरह प्रभु ने उसके दिल की इच्छा को पूरा किया। आइए हम ध्यान से पढ़ें प्रेरितों के काम 10 : 15 – 35 ''15 फिर दूसरी बार उसे शब्द सुनाई दिया, "जो कुछ परमेश्वर ने शुद्ध ठहराया है, उसे तू अशुद्ध मत कह।" 16 तीन बार ऐसा ही हुआ; तब तुरन्त वह पात्र आकाश पर उठा लिया गया। 17 जब पतरस अपने मन में दुविधा में था, कि यह दर्शन जो मैं ने देखा वह क्या हो सकता है, तो देखो, वे मनुष्य जिन्हें कुरनेलियुस ने भेजा था, शमौन के घर का पता लगाकर द्वार पर आ खड़े हुए, 18 और पुकारकर पूछने लगे, "क्या शमौन जो

पतरस कहलाता है, यहीं अतिथि है?" 19 पतरस तो उस दर्शन पर सोच ही रहा था, कि आत्मा ने उससे कहा, "देख, तीन मनुष्य तेरी खोज में हैं। 20 अतः उठकर नीचे जा, और निःसंकोच उनके साथ हो ले; क्योंकि मैं ही ने उन्हें भेजा है।" 21 तब पतरस ने उतरकर उन मनुष्यों से कहा, "देखो, जिसकी खोज तुम कर रहे हो, वह मैं ही हूँ। तुम्हारे आने का क्या कारण है?" 22 उन्होंने कहा, "कुरनेलियुस सूबेदार जो धर्मी और परमेश्वर से डरनेवाला और सारी यहूदी जाति में सुनाम मनुष्य है, उसने एक पवित्र स्वर्गदूत से यह निर्देश पाया है कि तुझे अपने घर बुलाकर तुझ से वचन सुने।" 23 तब उसने उन्हें भीतर बुलाकर उनकी पहुनाई की। कुरनेलियुस के घर में पतरस दूसरे दिन वह उनके साथ गया, और याफा के भाइयों में से कुछ उसके साथ हो लिए। 24 दूसरे दिन वे कैसरिया पहुँचे, और कुरनेलियुस अपने कुटुम्बियों और प्रिय मित्रों को इकट्ठा करके उनकी बाट जोह रहा था। 25 जब पतरस भीतर आ रहा था, तो कुरनेलियुस ने उससे भेंट की, और उसके पाँवों पर गिर कर उसे प्रणाम किया; 26 परन्तु पतरस ने उसे उठाकर कहा, "खड़ा हो, मैं भी तो मनुष्य हूँ।" 27 और उसके साथ बातचीत करता हुआ भीतर गया, और बहुत से लोगों को इकट्ठे देखकर 28 उनसे कहा, "तुम जानते हो कि अन्यजाति की संगति करना या उसके यहाँ जाना यहूदी के लिये अधर्म है, परन्तु परमेश्वर ने मुझे बताया है कि किसी मनुष्य को अपवित्र या अशुद्ध न कहूँ। 29 इसी लिये मैं जब बुलाया गया तो बिना कुछ कहे चला आया। अब मैं पूछता हूँ कि मुझे किस काम के लिये बुलाया गया?" 30 कुरनेलियुस ने कहा, "इसी घड़ी, पूरे चार दिन हुए, मैं अपने घर में तीसरे पहर प्रार्थना कर रहा था; तो देखो, एक पुरुष चमकीला वस्त्र पहिने हुए, मेरे सामने आ खड़ा हुआ 31 और कहने लगा, 'हे कुरनेलियुस, तेरी प्रार्थना सुन ली गई है और तेरे दान परमेश्वर के सामने स्मरण किए गए हैं। 32 इसलिये किसी को याफा भेजकर शमौन को जो पतरस कहलाता है, बुला। वह समुद्र के किनारे शमौन, चमड़े का धन्धा करनेवाले के घर में अतिथि है।' 33 तब मैं ने तुरन्त तेरे पास लोग भेजे, और तू ने भला किया जो आ गया। अब हम सब यहाँ परमेश्वर के सामने हैं, ताकि जो कुछ परमेश्वर ने तुझ से कहा है उसे सुनें।" पतरस का उपदेश 34तब पतरस ने कहा, "अब मुझे निश्चय हुआ कि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता, 35 वरन् हर जाति में जो उससे डरता और धर्म के काम करता है, वह उसे भाता है।'' पापियों को बचाने के लिए प्रभु इस दुनिया में आए। लेकिन जिनका जीवन धर्मी है और उनके सामने विनम्र हैं, प्रभु उनके बन जाते हैं। कुरनेलियुस यद्यपि एक इतर जाति का था, लेकिन वह धर्मी और विनम्र था। वह उपवास करता था और अपने घर में प्रार्थना करता था। तभी प्रभु ने उसे सुना और उससे बात की, बाद में प्रभु परमेश्वर ने भी एक दृष्टांत में प्रेरित पतरस से बात की और उसे कुरनेलियुस के घर भेज दिया। जोपा में, जैसे ही वे प्रभु की उपस्थिति में आते थे, लोगों ने परमेश्वर के वचन को बड़ी इच्छा के साथ प्राप्त किया। हम ने वचन 35 में पढ़ा हैं ''35 वरन् हर जाति में जो उससे डरता और धर्म के काम करता है, वह उसे भाता है।'' प्रभु एक निष्पक्ष प्रभु है, वह संपूर्ण मानव जाति का प्रभु है, जो भी उनका सत्य मानता है और प्रभु का भय उनमे है। याद रखें, जो परमेश्वर को खोजते हैं, वे उन्हें पा लेंगे। भजन संहिता 62 : 9 कहता है ''सचमुच नीच लोग तो अस्थाई, और बड़े लोग मिथ्या ही हैं; तौल में वे हलके निकलते हैं; वे सब के सब साँस से भी हलके हैं।'' आज, हम में से बहुत से लोग सोचते हैं कि हम विशेषाधिकार प्राप्त किये हुए हैं क्योंकि हम जन्म से क्रिस्ति हैं। प्रभु हमसे बातें करते हैं। लेकिन अंत में, हमें एहसास होना चाहिए कि हम कौन सा न्याय प्राप्त करेंगे। हमारे प्रभु ने हर जगह प्रचारकों को सुसमाचार प्रचार करने, सच्चाई बताने और लोगों को उनके दोष बताने के लिए रखा है। शुरुआत से ही, परमेश्वर ने अपने चुने हुए लोगों को चुना है, प्रचारक जो वचन का प्रचार करेंगे। कुरनेलियुस एक धर्मी व्यक्ति था, एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति जिसने उपवास किया

और प्रार्थना की, प्रभु सीधे उससे बात कर सकते थे। लेकिन, परमेश्वर ने प्रेरित पतरस को उसके पास वचन साझा करने के लिए भेजा। हमारे जीवन में भी, भजन संहिता 62 : 9 में जो वचन है वह वचन स्थापित नहीं होना चाहिए। एक दिन प्रभु को यह नहीं कहना चाहिए कि ''मैं तुम्हे नहीं जानता''। आज, हम में से कुछ लोग अभी भी यही महसूस करते हैं कि चर्च क्यों जाना है, हमें पास्टर की आवश्यकता क्यों है? परमेश्वर ने अपने वचन का प्रचार करने और हमारी आँखों से कचरा हटाने के लिए पास्टर की स्थापना की है। साथ ही, उन लोगों को भी लाना जो अंधेरे में है लेकिन उजाले की ओर लाना हैं। जीवन में पालन करने के लिए प्रभु ने हमारे लिए कुछ आज्ञाएँ रखी हैं, कुछ नियमों और व्यवस्था का पालन भी रखा है जिनका हमें पालन करना है। हमें इसे हल्के में नहीं लेना चाहिए। हमें कभी भी इसे तुच्छ नहीं समझना चाहिए। हमें हमेशा इस सत्य को याद रखना चाहिए कि यीशु मसीह को इस दुनिया में भेजा गया था, ताकि हम पापियों को नाश होने से बचा सकें। उनके वचन को सुनाने के लिए; परमेश्वर ने इस दुनिया के चारों कोनों में प्रचारकों को रखा है। इस प्रकार हमारे लिए एक सभा बनाई गई है। लैव्यव्यवस्था 20: 26 कहता है ''तुम मेरे लिये पवित्र बने रहना; क्योंकि मैं यहोवा स्वयं पवित्र हूँ, और मैं ने तुम को और देशों के लोगों से इसलिये अलग किया है कि तुम निरन्तर मेरे ही बने रहो।'' यीशु मसीह ने हमें अन्यजातियों से अलग कर दिया है, इस प्रकार उनके चुने हुए कहे जा सकें। साथ ही, जैसा कि यीशु पिता परमेश्वर के आज्ञाकारी थे इसलिए वह भी चाहते हैं कि हम उनके आज्ञाकारी बनें। उसने भेड़ और बकरियों को अलग कर दिया है। इस प्रकार, इस सच्चाई को कौन जानता है? जो धर्मी हैं, जो प्रभु का भय मानते हैं और उनके सामने आदर करे। प्रभु परमेश्वर ने हमें अशुद्ध लोगों से अलग कर दिया है, उन्होंने हमें दुनिया से अलग कर दिया है। याद रखें, यीशु मसीह ने कहा था ''मैं इस दुनिया में हूँ, फिर भी इस दुनिया का नहीं'' यीशु ने भी हमसे कहा है ''तुम इस दुनिया में हो, फिर भी तुम इस दुनिया के नहीं हो।'' जब आप प्रभु के लिए खड़े होंगे, तो हजारों हमारे खिलाफ उठेंगे, लेकिन हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि हम सत्य को जानते हैं और इस तरह सत्य हमें इस दुनिया से अलग कर देगा। जो लोग परमेश्वर के वचन को सुनने के लिए हर समय प्यासे हैं वे धर्मी हैं। 1 थिस्सलुनीकियों 4: 7 ''क्योंकि परमेश्वर ने हमें अशुद्ध होने के लिये नहीं, परन्तु पवित्र होने के लिये बुलाया है।'' परमेश्वर ने हमें धर्मी होने के लिए बुलाया है और हम धर्मी कैसे बनेंगे? लगातार परमेश्वर के वचन को सुनकर। वचन हमें तब तक काटता है जब तक हमारा लहू नहीं बह जाता और हमारी सारी गंदगी हमारे लहू से निकल नहीं जाती है और तब जाकर हम प्रभु के लिए पवित्र और धर्मी बन जाते हैं। हमें अपने जीवन में निरंतर शुद्धिकरण की आवश्यकता है। कोई भी व्यक्ति अपने जीवन को अपने दम पर शुद्ध नहीं कर सकता है, यह एक बड़ा झूठ है, अपने पापों को छिपाने के लिए वह प्रभु के वचन को सुनने से दूर रहता है। न तो शक्ति से, न तो सामर्थ से, पर मेरी आत्मा से, प्रभु कहते है, हम पवित्र हो सकते हैं। हमें पता होना चाहिए कि शैतान ने यीशु मसीह को नहीं छोड़ा, अलग–अलग तरीकों से उसने यीशु को परखा। क्या वह हमें अकेला छोड़ देगा? कभी नहीं। हम प्रभु के सामने मिट्टी और धूल हैं। हम उस फूल की तरह हैं जो सुबह खिलता है और शाम तक मुरझा जाता है। हम अपना ख्याल कैसे रख सकते हैं? हम कुछ भी करने के लिए योग्य नहीं हैं, हम अतिदुखी लोग हैं, हम खुद को कैसे बचा सकते हैं। जी हाँ, यही कारण है कि नबी यशायाह ने कहा ''प्रभु मैं अशुद्ध लोगों के बीच में रहता हूं, मेरे होठों को स्पर्श करो और पवित्र करो। क्योंकि प्रभु परमेश्वर ने यशायाह के होंठों को छुआ और उसे पवित्र किया, यशायाह एक महान नबी बन गए।'' परमेश्वर हमें अलग–अलग तरीकों से, उनके वचन द्वारा, उनकी आत्मा द्वारा, उनके अनुग्रह और दया से छू सकते है। यह सब उनके पवित्र मंदिर में होगा।

यशायाह परमेश्वर से कहाँ मिले? मंदिर में। हन्नाह परमेश्वर से कहाँ मिली? मंदिर में। हमें बाइबिल को अच्छी तरह से पढ़ना चाहिए और इसे अच्छी तरह समझना चाहिए। हमें कभी भी अपनी बुद्धि पर गर्व नहीं करना चाहिए। जो लोग सोचते हैं कि वे बुद्धिमान हैं, परमेश्वर उन्हें मूर्ख बना देते हैं। लेकिन, जो लोग अपने आप को परमेश्वर के सामने मूर्खता के रूप में स्वीकार करते हैं, परमेश्वर उसे महान ज्ञान के साथ उठाते हैं। हमें इस प्रकार प्रभु के चरणों में गिरना सीखना चाहिए, क्योंकि यही वह जगह है जहाँ हम खुद को नम्र कर सकते हैं और सीख सकते हैं और अपने आप को ज्योतिमान कर सकते हैं। हम कंप्यूटर पर या विभिन्न पुस्तकों को पढ़कर परमेश्वर के वचन को नहीं सीख सकते हैं, लेकिन प्रभु के चरणों को छोड़कर हम कहीं भी सीख नहीं सकते हैं।

नीतिवचन 8: 17 कहता है ''जो मुझ से प्रेम रखते हैं, उनसे मैं भी प्रेम रखती हूँ, और जो मुझ को यत्न से तड़के उठकर खोजते हैं, वे मुझे पाते हैं।'' प्रभु परमेश्वर ने कहा ''अगर हम उसे प्यार करते हैं, तो हम उसकी आज्ञाओं को मानेंगे। हमें सबसे पहले यह जानना चाहिए कि हमारे जीवन में प्रभु की इच्छा क्या है, हमें प्रभु से ''हमें प्रार्थनाओं में प्रभु से पूछना चाहिए ष्हमारे जीवन में उनकी क्या इच्छा है।'' यूहन्ना अध्याय 15 की पुस्तक में, यीशु स्पष्ट रूप से कहते हैं, ''जो मेरे साथ बनके नहीं रहता हैं, उन्हें उखाड़ फेंका जाएगा और आग में फेंक दिया जाएगा''। हम प्रभु के बिना कुछ भी नहीं कर सकते हैं, इस प्रकार हमें प्रभु से उनकी इच्छा हमारे लिए पूछने की आवश्यकता है। प्रभु परमेश्वर हमें रास्ता दिखाएंगे, तब हमें अपने जीवन में किसी भी योजना पर आगे बढ़ना चाहिए। जैसे की, नौकरी, शादी, या हमारे जीवन में कुछ भी। सामान्य मानव इच्छा यह है कि प्रभु हमारी इच्छा को जाने और प्रार्थना करें कि यह किया जाना चाहिए। यहां हम प्रभु की इच्छा नहीं पूछ रहे हैं, बल्कि अपनी इच्छा को थोपेंगे। हम अपने जीवन में प्रभु परमेश्वर की आशा और इच्छा पर विचार नहीं करते हैं। हमारे लिए यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि हम अपने भविष्य को तब तक निर्धारित नहीं कर सकते हैं, जब तक कि प्रभु हमारे लिए इसे निर्धारित नहीं करते है। प्रभु हमारे भविष्य को सबसे अच्छे से जानते हैं। यह हमारे सफल जीवन का एक रहस्य है। प्रभु हमारी मूर्खता पर हंसते हैं, क्योंकि वह हमारे दिल की हर धोखेबाज इच्छाओं को जानते है। यीशु मसीह ने अपने शिष्यों को तब बुलाया जब वह जानते थे कि उनका अंत आने वाला है, प्रभु अपने शिष्यों से दुखी होकर कहते हैं यूहन्ना 12: 27–28 में ''27 ''अब मेरा जी व्याकुल है। इसलिये अब मैं क्या कहूँ? 'हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा?' नहीं, क्योंकि मैं इसी कारण इस घड़ी को पहुँचा हूँ। 28 हे पिता, अपने नाम की महिमा कर।'' तब यह आकाशवाणी हुई, ''मैं ने उसकी महिमा की है, और फिर भी करूँगा।'' जब हम प्रभु की बात करते हैं, तो हम हमेशा कहते हैं कि ''आपकी कृपा और दया हम पर हों''। इस प्रकार, यीशु मसीह का कहना है कि ''मैंने आपका नाम प्रभु के रूप में बढ़ाया है''। तुरंत, स्वर्ग से एक ऊँची आवाज आई 28 ''हे पिता, अपने नाम की महिमा कर।'' तब यह आकाशवाणी हुई, ''मैं ने उसकी महिमा की है, और फिर भी करूँगा।'' स्वर्ग ने हमेशा सुना कि यीशु ने इस धरती पर क्या कहा। इसी तरह, हमारे विचार और शब्द स्वर्ग में भी सुने जाते हैं, हमारे हर मूर्खता को स्वर्ग में भी देखा जाता है। प्रभु हमारे अच्छे कामों को थपथपाते है और वह हमारी मूर्खता पर हंसते है। चाहे हम जीवित रहें या मरें, प्रभु की महिमा करना चाहिए। यहां तक कि हमारी मृत्यु में भी, परमेश्वर की महिमा होनी चाहिए। यशायाह 53: 12 ''इस कारण मैं उसे महान् लोगों के संग भाग दूँगा, और वह सामर्थियों के संग लूट बाँट लेगा; क्योंकि उसने अपना प्राण मृत्यु के लिये उण्डेल दिया, वह अपराधियों के संग गिना गया, तौभी उसने बहुतों के पाप का बोझ

उठा लिया, और अपराधियों के लिये विनती करता है।'' यीशु मसीह ने इस दुनिया में कोई गलत काम नहीं किया, लेकिन क्या कारण है कि उन्हें सूली पर चढ़ा दिया गया? ताकि हम में से कई लोग स्वर्ग जा सकें और उनकी महिमा को देख सकें। यहां तक कि मृत्यु में भी यीशु मसीह ने अपने पिता परमेश्वर की महिमा की। वह हमारे लाभ के लिए मर गए कि हम स्वर्ग की महिमा देख सकें। हम जानते हैं कि जिसने भी पूछा था कि यीशु को क्रूस पर चढ़ाने की आवश्यकता क्यों है? क्या उन्हें इसमें कोई दोष नजर आया? सभी ने कहा ''कोई नहीं''। फिर भी पिता परमेश्वर की इच्छा के अनुसार, यीशु ने अपना जीवन बलिदान कर दिया ताकि हम में से कई स्वर्ग की महिमा को देख सकें। हमें यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि हमारे माध्यम से, यीशु को ऊँचा उठाने और महिमा देने की आवश्यकता है। यीशु में कोई पाप नहीं था, कोई अपराध नहीं था, लेकिन दूसरों के पापों और अपराध के कारण यीशु ने अपने जीवन का बलिदान कर दिया। हमें भरे हुए गेहूँ की तरह होना चाहिए न कि ऐसे गेहूँ की तरह जो भीतर से खाली हो, अगर दोबारा बोया जाए तो उसे अंकुर फूटना चाहिए और मुरझाए नहीं। इस प्रकार हमें प्रभु के लिए सही बीज होना चाहिए, ताकि जब पृथ्वी में बोया जाए, तो हम पृथ्वी में अंकुरित हो जाएं और अंकुर खिल उठें। खाली बीज नहीं फूटेगा बल्कि जमीन में मर जाएगा।

शाऊल अपने जनजाति के बीच एक बहुत ही विद्वान और प्रसिद्ध व्यक्ति था। वह सभी कानूनों को जानता था, इस प्रकार उसने लगातार उन लोगों को सताया जो यीशु मसीह का अनुसरण करते थे। प्रभु ने उससे क्या पूछा ''हे शाऊल, हे शाऊल तु कांटों के खिलाफ क्यों ठोकर मारना पसंद करता हैं? अगर कोई कांटों के खिलाफ ठोकर खाए तो किसे नुकसान होगा? हम खुद को चोट पहुचायेंगे, यह वही है जब हम सोचते हैं कि हम अपनी दृष्टि में बुद्धिमान हैं। लेकिन हम बाद में देखते हैं कि शाऊल कैसे पौलुस में परिवर्तित हो गया। कोई भी व्यक्ति अपने भीतर बदलाव नहीं ला सकता है, जब तक कि प्रभु परमेश्वर की इच्छा न हो। हमें लगता है कि हम अपने दृष्टिकोण में बुद्धिमान और सक्षम हैं, जब हम ऐसा करते हैं तब हम कांटों के खिलाफ ठोकर मार रहे हैं। लेकिन जो लोग परमेश्वर की दृष्टि में विनम्र हैं और जो लोग उनके वचन के प्यासे हैं और भूखे हैं और उन्हें परिश्रमपूर्वक खोजना चाहते हैं, वे प्रभु को पा लेंगे। प्रेरितों के काम 10: 1– 8 ''1 कैसरिया में कुरनेलियुस नाम का एक मनुष्य था, जो इतालियानी नामक पलटन का सूबेदार था। 2 वह भक्त था, और अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था, और यहूदी लोगों को बहुत दान देता, और बराबर परमेश्वर से प्रार्थना करता था। 3 उसने दिन के तीसरे पहर के निकट दर्शन में स्पष्ट रूप से देखा कि परमेश्वर का एक स्वर्गदूत उसके पास भीतर आकर कहता है, "हे कुरनेलियुस!" 4 उसने उसे ध्यान से देखा और डरकर कहा, "हे प्रभु, क्या है?" उसने उससे कहा, "तेरी प्रार्थनाएँ और तेरे दान स्मरण के लिये परमेश्वर के सामने पहुँचे हैं; 5 और अब याफा में मनुष्य भेजकर शमौन को, जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले। 6 वह शमौन, चमड़े का धन्धा करनेवाले के यहाँ अतिथि है, जिसका घर समुद्र के किनारे है।" 7 जब वह स्वर्गदूत जिसने उससे बातें की थीं चला गया, तो उसने दो सेवक, और जो उसके पास उपस्थित रहा करते थे उनमें से एक भक्त सिपाही को बुलाया, 8 और उन्हें सब बातें बताकर याफा को भेजा।'' कुरनेलियुस ने चाहा और परमेश्वर ने प्रेरित पतरस को उसके पास जाने और उपदेश देने के लिए आज्ञा दिया। हालाँकि, हम चाहे कितने ही भक्तिहीन हों, और चाहे कितने भी हम दानधर्म करते हैं और लोगों को दान देते हैं, हालाँकि हम परमेश्वर के वचन को बहुत सुनते होंगे, फिर भी हमें परमेश्वर के वचन को लगातार सुनने की आवश्यकता है। हमें प्रचार करने के लिए एक प्रचारक और एक कलीसिया की भी जरूरत है। अगर हमें लगता है कि हमें परमेश्वर के

वचन की आवश्यकता नहीं है, तो हम मूर्ख हैं और कांटों के खिलाफ ठोकर मारते हैं। यह किसका नुकसान है? इससे हमारा ही नुकसान होगा। लेकिन जब हम प्रभु के सामने विनम्र होते हैं और हम जो कुछ भी करते हैं, उसमे प्रभु को पाने की कोशिश करते हैं, प्रभु हमसे प्यार करते हैं। आइए हम पढ़ते हैं दानिय्येल 12: 2 ''जो भूमि के नीचे सोए रहेंगे उन में से बहुत से लोग जाग उठेंगे, कितने तो सदा के जीवन के लिये, और कितने अपनी नामधराई और सदा तक अत्यन्त घिनौने ठहरने के लिये।'' चुनाव हमारा है, हमें क्या करने की आवश्यकता है – प्रभु के नाम की महिमा करें या अपने स्वयं के अहंकार का महिमा करें। हम में से कई लोग स्वर्ग की महिमा को देखने के लिए उठेंगे और कई लोग दांतों को पिस्ते हुए मृत्यु को देखेंगे। वचन सत्य है, पापी वचन सुनते हैं और बच जाते हैं। आज भी, परमेश्वर चाहता है कि हम वचन की सच्चाई सुनें और बेहतर के लिए अपना जीवन बदलें। वह चाहता है कि हम आज अपनी आँखें खोलें। दुनिया के सभी कोनों में, हम सब मर जाएंगे। लेकिन कुछ उनकी महिमा करने के लिए उठेंगे और दूसरों को नरक की आग में अपने दांतों को पीसने के लिए डाल दिया जाएगा। चुनाव हमें करना है। यीशु अपनी मृत्यु के बाद तीसरे दिन जी उठे, आएं पढ़ते है प्रेरितों के काम 1: 3 ''उसने दुःख उठाने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आप को उन्हें जीवित दिखाया, और चालीस दिन तक वह उन्हें दिखाई देता रहा, और परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा।'' जब यीशु के शिष्य उन्हें देख रहे थे, यीशु स्वर्ग में उठा लिए गए, आइए हम पढ़ें प्रेरितों के काम 1: 9–11 ''9 यह कहकर वह उन के देखते–देखते ऊपर उठा लिया गया, और बादल ने उसे उनकी आँखों से छिपा लिया। 10 उसके जाते समय जब वे आकाश की ओर ताक रहे थे, तो देखो, दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहिने हुए उन के पास आ खड़े हुए, 11 और उनसे कहा, ''हे गलीली पुरुषो, तुम क्यों खड़े आकाश की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा।''

जिस तरह यीशु इस धरती पर केवल कुछ वर्षों तक रहे, वह आए, उन्होंने सेवा की और वह हमारी खातिर क्रूस पर मर गए। हम भी हमेशा के लिए इस धरती पर नहीं रहेंगे, हालांकि जितने दिनों के लिए प्रभु परमेश्वर ने हमारे लिए इच्छा की है हम उतने दिन जीवित रहेंगे, यह एक अवसर है जो प्रभु ने हमें जीने के लिए दिया है। यीशु को कैसे स्वर्ग में उठा लिए गए थे, वह उसी तरह से वापस आएंगे, ताकि वह इस दुनिया से उनके चुने हुए लोगों का चुनाव कर सके। उस समय, हमें भी उनके चुनाव के रूप में गौरव के लिए ऊपर उठाया जाना चाहिए। हम जानते हैं कि धनवान मनुष्य इब्राहीम से कैसे रो रहा था ''मुझे पृथ्वी पर जाने और अपने भाइयों को समझाने का एक मौका दो ताकि वे प्रभु को स्वीकार करें'' इस के लिए इब्राहीम ने उस से कहा, उन के पास तो मूसा और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें हैं, वे उन की सुनें। तुम्हारे जाने और उन्हें बताने से वे नहीं बदलेंगे। प्रभु परमेश्वर का वचन सत्य है, इस प्रकार प्रेरित पौलुस लिखते हैं फिलिप्पियों 3: 20 ''पर हमारा स्वदेश स्वर्ग पर है; और हम एक उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के वहाँ से आने की बाट जोह रहे हैं।'' जब तक हमारे यीशु मसीह फिर से नहीं आ जाते, तब तक हमें लगातार बेहतर होते रहना चाहिए। यीशु एक बार फिर हमें अपने गौरव के स्थान पर ले जाएंगे। हम स्तिफनुस के जीवन को जानते हैं, आइए हम पढ़ें प्रेरितों के काम 7: 51– 60 ''51''हे हठीले, और मन और कान के खतनारहित लोगो, तुम सदा पवित्र आत्मा का विरोध करते हो। जैसा तुम्हारे बापदादे करते थे, वैसे ही तुम भी करते हो। 52 भविष्यद्वक्ताओं में से किस को तुम्हारे बापदादों ने नहीं सताया? उन्होंने उस धर्मी के आगमन का पूर्वकाल से सन्देश देनेवालों को मार डाला; और

अब तुम भी उसके पकड़वानेवाले और मार डालनेवाले हुए। 53 तुम ने स्वर्गदूतों के द्वारा ठहराई हुई व्यवस्था तो पाई, परन्तु उसका पालन नहीं किया।" 54 ये बातें सुनकर वे जल गए और उस पर दाँत पीसने लगे। 55 परन्तु उसने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर देखा और परमेश्वर की महिमा को और यीशु को परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा हुआ देखकर 56 कहा, "देखो, मैं स्वर्ग को खुला हुआ, और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा हुआ देखता हूँ।" 57 तब उन्होंने बड़े शब्द से चिल्लाकर कान बन्द कर लिए, और एक साथ उस पर झपटे; 58 और उसे नगर के बाहर निकालकर उस पर पथराव करने लगे। गवाहों ने अपने कपड़े शाऊल नामक एक जवान के पाँवों के पास उतार कर रख दिए। 59 वे स्तिफनुस पर पथराव करते रहे, और वह यह कहकर प्रार्थना करता रहा, "हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर।" 60 फिर घुटने टेककर ऊँचे शब्द से पुकारा, "हे प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा।" और यह कहकर वह सो गया।'' स्तिुफनुस को हालांकि पत्थरवाह करके मौत के घाट उतार दिया गया था, स्तिुफनुस के चेहरे पर एक चमक थी क्योंकि उसने देखा कि स्वर्ग का द्वार खुला है और यीशु उसके स्वागत के लिए द्वार पर इंतजार कर रहे हैं। स्तिुफनुस ने सच्चाई का प्रचार किया, लेकिन लोगों ने सच्चाई को स्वीकार नहीं किया इसलिए उन्होंने उसे पत्थरवाह करके मौत के घाट उतार दिया। जिस तरह यीशु मसीह ने अपने अंतिम क्षणों में कहा था कि ''पिता उन्हें क्षमा कर दें, वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं''। इसलिए चाहे हम जिएं या मरें, हमें प्रभु के लिए मरना चाहिए और प्रभु के लिए जीना चाहिए।

यह संदेश हर उस जीवन में आशीर्वाद लाए जो इस संदेश को पढ़ते है।

पास्टर सरोजा म।